अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" से लिये गए मवाद की चौथी क़िस्त

Jannat Ki Ne'maten (Hindi)

जन्नत की ने'मतें

कुल सफ़हात 20

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

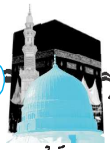

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नत की ने'मतें

येह रिसाला **(जन्नत की ने'मतें)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत़्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून "ग़ीबत की तबाहकारियां" के सफ़ह़ा 94 ता 108 से लिया गया है।

जन्नत की ने'मतें

दुआए अ़त्तार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई रिसाला "**जन्नत की ने'मतें**" के 19 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले उसे जन्नत की आ'ला ने'मतें नसीब फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दूरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : तुमहारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है, इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह (عَلَيْهِ السَّلَام) पैदा हुए, इसी में इन की रूह़े मुबारक़ क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन हलाकत त़ारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दूरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुमहारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ? इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह पाक ने अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **के अजसाम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है।** (سُنَنِ ابو داؤد ج ۱ ص ۳۹۱ حدیث ۱۰۴۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

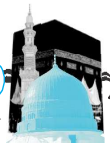

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का त़र्ज़े अ़मल :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NEGATIVE) बात की। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ़मले की तह़क़ीक़ करें ! अगर तुम **झूटे** निकले तो इस आयते मुबारका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे :

إِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوٓا
(پ ٢٦ الحجرات ٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो।

और अगर तुम **सच्चे** हुए तो येह आयते करीमा तुम पर सादिक़ आएगी :

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيمٍ ⑪
(پ ٢٩ القلم ١١)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआ़फ़ कर दें ! उस ने अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** ! मुआ़फ़ कर दीजिये आयिन्दा मैं ऐसा (या'नी ग़ीबतें और चुग़ल ख़ोरियां) नहीं करूंगा। (إحياء العلوم ج ٣ ص ١٩٣)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए : एक शख़्स ने किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें उन के दोस्त की कुछ

मन्फ़ी (NEGATIVE) बातें बताईं, इस पर उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्सोस ! तुम मेरे पास **तीन बुराइयां** ले कर आए : (1) मुझे मेरे इस्लामी भाई से **नफ़रत** दिलाई (2) इस वज्ह से मेरे **दिल** को (तश्वीशों और वस्वसों में) मश्ग़ूल किया और (3) अपने अमीन नफ़्स पर **तोहमत** लगाई । (या'नी मैं तुम्हें अमानत दार समझता था मगर तुम तो पेट के हल्के निकले !) (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۱۹۳)

महब्बतों के चोरों से बचो : बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : अक़्लों के दुश्मनों और महब्बतों के चोरों से बचो, येह चोर **बदगोई** करने वाले और **चुग़ली** खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि येह (ग़ीबतें और चुग़्लियां करने वाले) **लोग महब्बतें चुराते हैं ।**

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ص۱۵۱)

जुदा होने तक ह़ालते जिहाद में : ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन ज़ाज़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मेरे पास उ़मूमन जो भी आ कर बैठता है वोह जब तक चला न जाए मैं गोया उस के साथ **ह़ालते जिहाद** में होता हूं क्यूं कि वोह मुझे मेरे दोस्त से **मुतनफ़्फ़िर** करने (या'नी नफ़रत दिलाने) से बाज़ नहीं रहता, या मेरी **ग़ीबत** करने वालों की **ग़ीबतें** मुझ तक पहुंचा कर मुझे तश्वीश में डालता और आज़्माइश में मुब्तला करता है। (تَنبِیهُ الْمُغْتَرِّیْن ص۱۹۶) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही — बचूं चुग़्लियों से सदा या इलाही
कभी भी लगाऊं न तोहमत किसी पर — दे तौफ़ीक़े सिद्क़ो वफ़ा या इलाही

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदनी चेनल की बदौलत मौत से 17 दिन क़ब्ल ईमान मिल गया : एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि 20 अप्रैल 2009 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ बाबुल मदीना के रिहाइशी तक़रीबन 50 सालह एक ग़ैर मुस्लिम ने जब **मदनी चेनल** पर इस्लाम की ह़क़ीक़ी ता'लीमात को सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुतअस्सिर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया, उन का इस्लामी नाम मुह़म्मद सिद्दीक़ रखा गया। वोह जुमे'रात को **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर भी बन गए। **मदनी क़ाफ़िले** से वापस आने के दूसरे या तीसरे रोज़ ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना के नज़्दीक एक गाड़ी ने उन्हें कुचल दिया, येह ह़ादिसा जान लेवा साबित हुवा, यूं वोह इस्लाम की अनमोल दौलत से मालामाल होने के तक़रीबन 17 या 18 दिन बा'द इस दुन्या से रुख़्सत हो गए। **अल्लाह** करीम उन की मग़्फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मदनी चेनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़ जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ *ए'तिराफ़*
नफ़्से अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार शर्मे इस्यां के सबब होगा गुनहगार अश्कबार

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 632)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

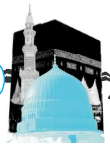

मरने से क़ब्ल कोई सुधरता है तो कोई बिगड़ता है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ख़ुश नसीब बन्दे को मौत से सिर्फ़ 17 या 18 दिन क़ब्ल इस्लाम की दौलत नसीब हो गई। **अल्लाहु क़दीर** की **ख़ुफ़्या तदबीर** किस के बारे में क्या है येह किसी को नहीं पता, **अल्लाह** पाक बे नियाज़ है, कोई तो अपनी सारी उ़म्र कुफ़्र में गुज़ार दे मगर मरते वक़्त **ईमान** की दौलत से सरफ़राज़ हो जाए जब कि कोई सारी उ़म्र नेकियों में बसर करने के बा वुजूद ब वक़्ते रुख़्सत **बुरे** ख़ातिमे से दो चार हो। हम रब्बे ज़ुल जलाल से भलाई का सुवाल करते हैं। एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से रिवायत है कि जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के **मरने से एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है। उस वक़्त वोह **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** पाक उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** पाक किसी के साथ बुराई का इरादा करता है तो **मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान** उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है। उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटक्ने लगती है। उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** पाक से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** पाक उस से मिलने को। (مُسند ابنِ راهَوَيه ج۳ ص۵۰۳)

www.dawateislami.net

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में

मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में : एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारे अ़लाक़े में एक ग़ैर मुस्लिम (उ़म्र तक़रीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों की त़रह़ येह लोग भी केबल पर फ़िल्में डिरामे देखा करते थे। जब रमज़ानुल मुबारक (1429 सि.हि.) में **मदनी चेनल** का आग़ाज़ हुवा तो केबल पर इस के मदनी सिल्सिले जारी हुए, उस ग़ैर मुस्लिम ने जब येह सिल्सिले देखे तो उसे बड़े अच्छे लगे। अब वोह अक्सरो बेश्तर **मदनी चेनल** ही देखा करता, मदनी चेनल की बरकत से आख़िरे कार वोह कुफ़्र के अंधेरे से नजात पाने और इस्लाम के नूर से अपने दिल को चमकाने के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** हाज़िर हुवा, और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया। फिर येह इस्लामी भाई हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हज़ारों इस्लामी भाइयों और **मदनी चेनल** के नाज़िरीन के सामने **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुरीद हो कर क़ादिरी रज़वी भी बन गया। नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, कभी कभार सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सर पर सजा कर

इस का फ़ैज़ भी लूटने लगा, **दा'वते इस्लामी** के **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) में क़ुरआने मजीद पढ़ने का सिल्सिला भी शुरूअ़ कर दिया। सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन दिन के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी शरीक हुवा। **अल्लाह** करीम उन को और हम सब को ईमान पर साबित क़दम रखे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

नाच गानों और फ़िल्मों से येह चेनल पाक है मदनी चेनल ह़क़ बयां करने में भी बेबाक है

मदनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है और शैत़ाने लईं रन्जूर है मग़्मूम है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 633)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ीबत करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं होती ﴿1﴾ जो माले ह़राम खाता हो ﴿2﴾ जो ब कसरत **ग़ीबत** करता हो ﴿3﴾ जो मुसल्मानों से **ह़सद** रखता हो।

(تَنبِيهُ الْغافِلين ص٩٥)

जन्नत की ज़मानत : हम गुनाहगारों को अपने रब से जन्नत दिलवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : जो शख़्स अपने घर में बैठ रहे और किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** न करे तो **अल्लाह** पाक उस के लिये (जन्नत का) ज़ामिन है।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج٣ص٤٦حديث٣٨٢٢)

जन्नत में आक़ा का पड़ोसी : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

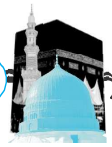

जो शख़्स अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ता हो, उस के अ़याल (या'नी घर वाले) ज़ियादा और माल कम हो और वोह शख़्स मुसल्मानों की **ग़ीबत** न करता हो मैं और वोह **जन्नत** में इन दो की त़रह़ होंगे। (या'नी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली मिला कर दिखाया)

(مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی ج ۱ ص ٤٢٨ حدیث ٩٨٦)

"या अल्लाह हमें जन्नत नसीब फ़रमा" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से जन्नत की 22 झल्कियां

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में **जन्नत** के अन्दर मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का क्या ख़ूब मदनी नुस्ख़ा बयान किया गया है ! سُبْحٰنَ اللهِ ! سُبْحٰنَ اللهِ ! سُبْحٰنَ اللهِ ! **जन्नत** की अ़ज़मत की भी क्या ही बात है ! **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल (1250 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 152 ता 162 पर तह़रीर कर्दा "**जन्नत का बयान**" में से चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मुंह में पानी आ जाएगा। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत भरी **जन्नत** की चाहत में बेताब हो जाइये और इसे पाने की जिद्दो जह्द तेज़ तर कर दीजिये चुनान्चे लिखा है : ❁ अगर **जन्नत** की कोई नाख़ुन भर चीज़ दुन्या में ज़ाहिर हो तो तमाम आस्मान व ज़मीन उस से आरास्ता हो जाएं और ❁ अगर **जन्नती का कंगन** (या'नी कलाई का एक ज़ेवर) ज़ाहिर हो तो आफ़्ताब (सूरज) की रोशनी मिटा दे, जैसे आफ़्ताब सितारों की रोशनी मिटा देता है ❁ **जन्नत** की

www.dawateislami.net

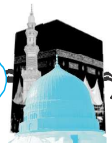

इतनी जगह जिस में कोड़ा (चाबुक, दुर्रा) रख सकें दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस के अन्दर जो कुछ है उस) से बेहतर है ❁ **जन्नत** की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं ❁ जन्नतियों को **जन्नत** में हर क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा ❁ अगर किसी **परिन्द** को देख कर उस का गोश्त खाने को जी हो तो उसी वक़्त भुना हुवा उन के पास आ जाएगा ❁ अगर **पानी** वग़ैरा की ख़्वाहिश हो तो कूज़े ख़ुद हाथ में आ जाएंगे, उन में ठीक अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ **पानी, दूध, शराब, शहद** होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़तरा कम न ज़ियादा, बा'द पीने के ख़ुद बख़ुद जहां से आए थे चले जाएंगे ❁ वहां की शराब दुन्या की सी नहीं जिस में बदबू और कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अ़क़्ल हो जाते हैं, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब इन सब बातों से पाक व मुनज़्ज़ह है ❁ वहां नजासत, गन्दगी, पाख़ाना, पेशाब, थूक, रींठ, कान का मैल, बदन का मैल अस्लन (या'नी बिल्कुल) न होंगे ❁ एक ख़ुशबूदार फ़रह़त बख़्श डकार आएगी, ख़ुशबूदार फ़रह़त बख़्श पसीना निकलेगा ❁ सब खाना हज़्म हो जाएगा और ❁ डकार और पसीने से मुश्क की ख़ुशबू निकलेगी ❁ हर वक़्त ज़बान से तस्बीह़ व तक्बीर ब क़स्द (या'नी इरादतन) और बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) मिस्ले सांस के जारी होगी ❁ कम से कम हर शख़्स के सिरहाने **दस हज़ार ख़ादिम** खड़े होंगे, ख़ादिमों में हर एक के एक हाथ में चांदी का पियाला होगा और दूसरे हाथ में सोने का और हर पियाले में नए नए

www.dawateislami.net

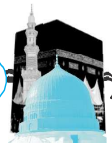

रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जाएगा लज़्ज़त में कमी न होगी बल्कि ज़ियादती होगी, हर निवाले में **सत्तर** मज़े होंगे, हर मज़ा दूसरे से मुम्ताज़, वोह (मज़े) मअ़न (या'नी एक ही साथ) महसूस होंगे, एक का एहसास दूसरे से मानेअ़ (या'नी रोकने वाला) न होगा ❁ जन्नतियों के न लिबास पुराने पड़ेंगे, न उन की जवानी फ़ना होगी ❁ अगर **जन्नत का कपड़ा** दुन्या में पहना जाए तो जो देखे बेहोश हो जाए, और लोगों की निगाहें उस का तहम्मुल (या'नी बरदाश्त) न कर सकें ❁ अगर कोई **हूर** समुन्दर में थूक दे तो उस के थूक की शीरीनी (मिठास) की वज्ह से समुन्दर शीरीं (मीठा) हो जाए और एक रिवायत है कि अगर **जन्नत** की औ़रत सात समुन्दरों में थूके तो वोह शहद से ज़ियादा शीरीं (या'नी मीठे) हो जाएं ❁ सर के बाल और पलकों और भवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मगीं (या'नी सुर्मा लगी) आंखें, **तीस बरस की उ़म्र** के मा'लूम होंगे कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे ❁ फिर लोग (**अल्लाह** पाक के हुक्म से) एक बाज़ार में जाएंगे जिसे मलाएका घेरे हुए हैं, उस में वोह चीज़ें होंगी कि उन की मिस्ल न आंखों ने देखी न कानों ने सुनी, न क़ुलूब (या'नी दिलों) पर उन का ख़तरा (ख़याल) गुज़रा, उस में से जो (चीज़) चाहेंगे, उन के साथ कर दी जाएगी और ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी और ❁ जन्नती उस बाज़ार में बाहम मिलेंगे, छोटे मरतबे वाला बड़े मरतबे वाले को देखेगा, उस का लिबास पसन्द करेगा, हुनूज़ (या'नी अभी) गुफ़्तगू ख़त्म भी न होगी कि ख़याल करेगा, मेरा लिबास उस से अच्छा है और येह इस वज्ह से कि **जन्नत** में किसी के लिये ग़म नहीं ❁ जन्नती बाहम मिलना चाहेंगे तो

www.dawateislami.net

एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा। और उन में **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब में मुअ़ज़्ज़ज़ वोह है जो **अल्लाह** पाक के वज्हे करीम के दीदार से हर सुब्ह़ व शाम मुशर्रफ़ होगा ❁ जब जन्नती **जन्नत** में जा लेंगे **अल्लाह** पाक उन से फ़रमाएगा : कुछ और चाहते हो जो तुम को दूं ? अ़र्ज़ करेंगे : तू ने हमारे मुंह रोशन किये, **जन्नत** में दाख़िल किया, जहन्नम से नजात दी। उस वक़्त पर्दा, कि मख़्लूक़ पर था उठ जाएगा तो **दीदारे इलाही** से बढ़ कर उन्हें कोई चीज़ न मिली होगी।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا زِيَارَةَ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ بِجَاهِ حَبِيْبِكَ الرَّؤُوْفِ الرَّحِيْمِ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالتَّسْلِيْمُ، امین!

(तरजमा : या **अल्लाह** पाक अपने ह़बीब रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े अपना दीदार नसीब फ़रमा, आमीन)

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा

जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हूरें पाने का अ़मल : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ीबतों और गुनाहों भरी बातों से जान छुड़ाइये और ख़ुद को **जन्नत** का ह़क़दार बनाइये। थोड़ी सी ज़बान चलाइये, اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْم ज़बान पर लाइये और **जन्नत की हूरें** पाइये। चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चालीस साल तक **अल्लाह** पाक की इ़बादत की। एक बार दुआ़ की : **या अल्लाह** पाक ! तेरी रह़मत से मुझे जो कुछ **जन्नत** में मिलने वाला है उस की कोई झलक

www.dawateislami.net

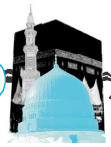

दुन्या में भी दिखा दे। अभी दुआ जारी थी कि यकदम मेह़राब शक़ हुई और उस में से एक ह़सीना व जमीला **हूर** बरआमद हुई, उस ने कहा कि तुझे **जन्नत** में मुझ जैसी **सो हूरें** इनायत की जाएंगी, जिन में हर एक की सो सो ख़ादिमाएं और हर ख़ादिमा की सो सो कनीज़ें होंगी और हर कनीज़ पर सो सो नाज़िमाएं (या'नी इन्तिज़ाम करने वालियां) होंगी। येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग ख़ुशी के मारे झूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को **जन्नत** में मुझ से ज़ियादा भी मिलेगा ? जवाब मिला : इतना तो हर उस आ़म जन्नती को मिलेगा जो सुब्ह़ व शाम اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيم पढ़ लिया करता है। (رَوْضُ الرَّياحِين ص٥٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मानों की आबरू वग़ैरा दूसरे मुसल्मान पर ह़राम है :

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मुसल्मान की सब चीज़ें मुसल्मान पर ह़राम हैं इस का माल और इस की **आबरू** और इस का **ख़ून**। आदमी को बुराई से इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसल्मान भाई को **ह़क़ीर** जाने।

(سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٥٤ حديث ٤٨٨٢)

तकब्बुर किसे कहते हैं : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अपने से किसी को ह़क़ीर जानना **तकब्बुर** कहलाता है, तकब्बुर एक तो ख़ुद **ह़राम** है मज़ीद इस की वज्ह से **ग़ीबत** का गुनाह भी सरज़द होता है। मग़रूर आदमी जिस को ह़क़ीर जानता है उस की **हंसी** उड़ाता है **अल्लाह** पाक पारह 26 **सूरतुल ह़ुजुरात** आयत नम्बर 11 में फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ (پ۲۶ الحجرات ۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें, अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों।

किसी को ह़क़ारत से मत देखो : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : "**सुख़्रियह**" से मुराद येह है कि जिस की हंसी उड़ाई जाए, उस की त़रफ़ ह़क़ारत से देखना। इस ह़ुक्मे ख़ुदावन्दी का मक़्सद येह है कि किसी को ह़क़ीर न समझो, हो सकता है वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक तुम से बेहतर, अफ़्ज़ल और ज़ियादा मुक़र्रब हो। चुनान्चे **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "कितने ही परेशान ह़ाल, परागन्दा बालों और फटे पुराने कपड़ों वाले ऐसे हैं कि जिन की कोई परवा नहीं करता लेकिन अगर वोह **अल्लाह** पाक पर किसी बात की क़सम खा लें तो वोह ज़रूर उसे पूरा फ़रमा दे।" (سُنَنِ ترمذی ج۵ ص۴۵۹ حدیث۳۸۸۰) इब्लीसे लईन ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़क़ीर जाना तो **अल्लाह** पाक ने उसे हमेशा हमेशा के लिये ख़सारे (या'नी नुक़्सान) में मुब्तला कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हमेशा की इ़ज़्ज़त के साथ काम्याब हो गए, इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। यहां इस मा'ना का भी एह़तिमाल (इम्कान) है कि किसी दूसरे को ह़क़ीर न जाने क्यूं कि मुम्किन है कि वोह अ़ज़ीज़ (या'नी

www.dawateislami.net

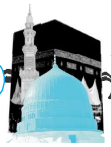

इ़ज़्ज़त वाला) हो जाए और तू ज़लील हो जाए फिर वोह तुझ से इन्तिक़ाम ले।

لَا تُهِيْنَ الْفَقِيْرَ عَلَّكَ اَنْ

تَرْكَعَ يَوْمًا وَّالدَّهْرُ قَدْ رَفَعَهٗ

या'नी : फ़क़ीर (या'नी ग़रीब आदमी) की तौहीन न कर शायद तू किसी दिन फ़क़ीर (या'नी ग़रीब) हो जाए और ज़माने का मालिक उसे अमीर कर दे।

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج۲ ص۱۱)

मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ? : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !

मुसल्मान के लिये ज़रूरी है कि उस की ज़ात से किसी मुसल्मान को किसी त़रह़ की भी नाह़क़ तक्लीफ़ न पहुंचे, न इस का माल लूटे, न इ़ज़्ज़त ख़राब करे, न इसे झाड़े न इसे मारे नीज़ **मुसल्मानों** को आपस में झगड़ने से क्या वासिता़ ! येह तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं, चुनान्चे ग़म ज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे और (कामिल) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ फ़रमाया है।

(صحیح بُخاری ج۱ ص۱۵ حدیث ۱۰)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि **कामिल मुसल्मान** वोह है जो लुग़तन (या'नी लुग़वी ए'तिबार से) और शर्अ़न (भी) हर त़रह़ मुसल्मान हो। (और) वोह **मोमिन** है जो किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** न करे, गाली, त़ा'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ **तह़रीर** करे। मज़ीद फ़रमाते हैं कि **कामिल**

www.dawateislami.net

मुहाजिर वोह मुसल्मान है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लुग़तन (या'नी लुग़वी ए'तिबार से) **हिजरत** है जो हमेशा जारी रहेगी। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 29)

इशारे से तक्लीफ़ देना भी जाइज़ नहीं : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे।** (سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٩١ حديث ٥٠٠٤) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान** के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे **मुसल्मान** की त़रफ़ **आंख** से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे।

(اَلزُّهد لِابن مُبارَك ص ٢٤٠ رقم ٦٨٩، اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج ٧ ص ١٧٧)

दिल हिला देने वाली ख़ारिश : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान को यूं तो तक्लीफ़ व ईज़ा देना बहुत ही आसान लगता है। उस को झाड़ दिया इस को लताड़ दिया, उस की **ग़ीबत** कर दी इस पर तोहमत जड़ दी, लेकिन नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त की सूरत में आख़िरत में येह सब बहुत भारी पड़ जाएगा, चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** के रिसाले, **''ज़ुल्म का अन्जाम''** सफ़ह़ा 21 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समुन्दर के कनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं। अहले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूं ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे

www.dawateislami.net

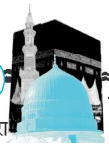

वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे फिर उन पर खुज्ली मुसल्लत़ कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां। तो कहा जाएगा : येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था। (اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب ج٤ ص٢٨٠ حديث ٥٦٤٩)

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई — हां एक दुआ तेरी कि मक़्बूले ख़ुदा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत की बरकत से क़िस्मत खुल गई : ग़ीबत

करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मिल कर **जश्ने विलादत** की ख़ूब धूमें मचाइये इस की बरकत के भी क्या कहने ! शह्र तराड़ खल ज़िलअ़ सघनोती (कश्मीर) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : **रबीउ़ल अव्वल शरीफ़** (1430 हि.) की बारहवीं शब हमारे यहां की मस्जिद में **जश्ने विलादत**

www.dawateislami.net

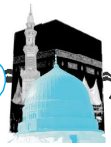

की ख़ुशी में **सब्ज़ झन्डे** और चराग़ां की तरकीब की जा रही थी। दरीं अस्ना चार अफ़राद जो कि नशाबाज़ थे मस्जिद के इमाम साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : हम नशा करने की तय्यारी कर ही रहे थे कि ख़याल आया आज ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रात भी क्या हम नशे का गुनाह करेंगे ! क्यूं न हम तौबा कर लें। लिहाज़ा आप के पास हाज़िर हुए हैं। चुनान्चे उन्हों ने तौबा की और मस्जिद में होने वाले **जश्ने विलादत** की बहारें लूटने में शरीक हो गए। इमाम साहिब ने **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदारान से राबिता किया, इस्लामी भाई मस्जिद पहुंचे और उन्हों ने उन से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात की और हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िले** के जद्वल के मुताबिक़ उन की तरबियत शुरूअ़ कर दी, उन का सीखने सिखाने का शौक़ दीदनी था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **जश्ने विलादत** की बरकत से चारों ने नमाज़ों की पाबन्दी निभाने, दाढ़ी मुबारक सजाने, **63 दिन के सुन्नतों भरे तरबियती कोर्स** की सआ़दत पाने और मसाजिद आबाद फ़रमाने वग़ैरा वग़ैरा नेकियां बजा लाने की अच्छी अच्छी निय्यतें भी कीं, नीज़ घर वालों समेत सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद बन गए। येह बयान देते वक़्त दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** से वाबस्ता हुए उन्हें अभी चन्द ही रोज़ हुए हैं और वोह इस वक़्त सुन्नतों की तरबियत के 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र में हैं।

ख़ूब झूमो ऐ गुनहगारो तुम्हारी ईद है
हो गया बख़्शिश का सामां ईदे मीलादुन्नबी

www.dawateislami.net

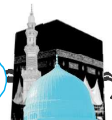

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 380)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चराग़ां देख कर काफ़िर ने इस्लाम क़बूल कर लिया :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **जश्ने विलादत** की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें हैं, आ़शिक़ाने रसूल **जश्ने विलादत** मनाते हैं जभी तो उन नशा बाज़ों को इस रह़मतों भरी रात का पता चला और उन के दिल में एह़तिराम पैदा हुवा और सीधे ऐसी मस्जिद में पहुंचे जहां जश्ने विलादत का **चराग़ां** हो रहा था और सब्ज़ सब्ज़ परचम लहरा रहे थे। जश्ने विलादत के चराग़ां की तो क्या बात है। एक इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि एक बार **जश्ने विलादत** के मौक़अ़ पर मस्जिद को सजा कर दुल्हन बनाया हुवा था, एक ग़ैर मुस्लिम क़रीब से गुज़रा उस ने सजावट के बारे में मा'लूमात की जब उसे बताया गया कि हम ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में येह अ़ज़ीमुश्शान चराग़ां किया है, तो उस का दिल नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत से लबरेज़ हो गया कि आज विलादत को 1500 साल गुज़र गए इस के बा वुजूद मुसल्मान अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस क़दर तुज़्को एह़तिशाम से जश्ने विलादत मनाते और अपनी मस्जिदों और घरों को यूं सजाते हैं तो बस येही दीन सच्चा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने कुफ़्र से तौबा की, कलिमा पढ़ा और ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गया।

जश्ने विलादत का चराग़ां : आशिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

ह़ज़रत'' (561 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 174 पर है : **अ़र्ज़ :** मीलाद शरीफ़ में झाड़ (या'नी पन्जशाख़ा मश्अ़ल), फ़ानूस,[1] फ़ुरूश[2] वग़ैरा से ज़ेबो ज़ीनत **इसराफ़** है या नहीं ? **इर्शाद :** उ़लमा फ़रमाते हैं : لَاخَيْرَ فِى الْاِسْرَافِ وَلَا اِسْرَافَ فِى الْخَيْر (या'नी इसराफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं ।) जिस शै से ता'ज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो, हरगिज़ **मम्नूअ़ नहीं हो सकती ।**

एक हज़ार शम्एं : **इमाम** ग़ज़ाली (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने एह़याउल उ़लूम शरीफ़ में सय्यिद अबू अ़ली रूज़बारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से नक़्ल किया कि एक बन्दए सालेह़ ने मजलिसे ज़िक्र शरीफ़ तरतीब दी और उस में **एक हज़ार शम्एं** रोशन कीं । एक शख़्स ज़ाहिर बीन पहुंचे और येह कैफ़िय्यत देख कर **वापस** जाने लगे । बानिये मजलिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर ले जा कर फ़रमाया कि जो **शम्अ़** मैं ने ग़ैरे ख़ुदा के लिये रोशन की हो वोह **बुझा** दीजिये । कोशिशें की जाती थीं और कोई शम्अ़ **ठन्डी** न होती ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۲ص۲٦مُلَخَّصاً)

लहराओ सब्ज़ परचम ऐ इस्लामी भाइयो !
घर घर करो चराग़ां कि सरकार आ गए

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 511)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

---

1. एक क़िस्म का शम्अ़ दान जिस पर पिंजरे की शक्ल का बारीक कपड़ा या काग़ज़ चढ़ा होता है जो घुमाने या हवा के ज़ोर पर गर्दिश करता है ।
2. येह फ़र्श की जम्अ़ है । या'नी चूने वग़ैरा से ज़मीन की सत्ह़ हमवार करना ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

कुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस शख़्स ने कुरआने पाक सीखा और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है उस पर अ़मल किया, कुरआन शरीफ़ उस की शफ़ाअ़त करेगा और जन्नत में ले जाएगा।

(تاریخ مدینۃ دمشق، ۳/۴۱، معجم کبیر، ۱۹۸/۱۰، حدیث: ۱۰۴۵۰)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net